डाक पंजीकरण संख्या : GPOLW/NP-86/2012-14 स्थापित : वर्ष 1947

लोकमत

लखनऊ | बीकानेर | जयपुर से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

प्रदेश में शैल चित्रों का सबसे बड़ा भंडार है

लखनऊ | लोकमत न्यूज

tidisciplinary Orientation Workshop
INSTITUTE OF

बीरबल साहनी पुरावनस्पतिविज्ञान संस्थान में गुरूवार को आए शैल चित्र विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किये। अवसर था शैल चित्रों के बहु. वैषयिक अध्ययन पर आयोजित एक कार्यशाला जिसमे प्रदेश के विज्ञानं प्रौद्योगिकी के प्रमुख सचिव डा हरशरण दास मुख्य अतिथि थे। डा दास ने शैल चित्रों को अनमोल धरोहर बताते हुए हर किसी को इनके संरक्षण के लिए जागरूक होने का आह्वान किया, डा दास ने कहा पुरातत्त्व विशेषज्ञों तथा विज्ञानियों को भी हर ऐसी धरोहर को सरकार के ध्यान में लाना चाहिए जिससे उनका संरक्षण हो सके। तो वही प्रो सुनील बाजपेयी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए

इस आयोजन संस्थान में होने पर हर्ष व्यक्त करते,हुए कहा कि अब समय आ गया है कि प्रकृति का अध्ययन केवल किसी एक विषय नहीं अपितु बहुत से विषयों के उपयोग से किया जाना चाहिए। मैसूर से आए प्रोअडिगा सुन्दरा ने शैल चित्रो का विस्तृत परिचय देते हुए उनके संरक्षण तथा उनके डाक्युमेंटेशन पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि यह उनके अध्ययन की दिशा में पहला कदम होगा। तो वही इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र से आए प्रोजेक्ट निदेशक डॉ बी एल मल्ल ने उत्तर प्रदेश की इस प्राकृतिक निधि को बचाने के लिए इस कार्यक्रम को पहला चरण बताया उनका कहना था की जन जागरूकता के महत्त्व को अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए,उनका मानना था कि अनेक विशेषज्ञताओं के उपलब्ध होने के कारण बी एस आई पी इसके लिए सबसे उपयुक्त संस्था है जहां सम्बंधित विशेषज्ञ तथा समन्वयन की क्षमता हैं उत्तर प्रदेश के इस समन्यक डॉ सी एम नौटियाल ने कार्यशाला के उद्देश्यों का परिचय देते हुए भावी योजना पर प्रकाश डाला तथा कहा कि अगले कुछ महीनो में ही फील्ड पर जाने की योजना है,उत्तर प्रदेश में सोनभद्रए बांदा शंकरगढ़ चंदौली जैसी अनेक शैल चित्र स्थलियाँ है, अपराह्न तकनीकी सत्र में प्रो कमल अग्रवाल ने इस विषय में भू विज्ञानिकों की भूमिका ,प्रोडी पी तिवारी ने सोनभद्र की शैल चित्र सम्पदा ए डा बी एल मल्ल ने विस्तृत योजना तथा डॉ सी एम नौटियाल ने शैल चित्रों के आयु निर्धारण की नवीनतम विधियों का उल्लेख किया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों के अतिरिक्त सोनभद्र के डॉ जीतेन्द्र सिंह एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के डॉ रणबीर सिंह के अतिरिक्त बड़ी सख्या में अनेक संस्थाओं के भू विज्ञान इतिहास पुरातत्त्व एवं नृ. विज्ञान के विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

कैनविज टाइम्स

सिर्फ सच

वर्ष 3 अंक 309 मूल्य ₹ 3.00 पृष्ठ 16 नगर संस्करण लखनऊ व बरेली से प्रकाशित

कार्यक्रम । राज्य में मौजूद हैं कई रॉक आर्ट

प्रदेश में शुरू होगा रॉक आर्ट पर शोध

संगोष्ठी

- ☐ [illegible] उ.प्र. के [illegible] में शुरू होगा शोध
- ☐ [illegible] पुराविज्ञान संस्थान में आयोजित रॉक आर्ट इन यूपी कार्यशाला

कैनविज टाइम्स ब्यूरो। लखनऊ

देश के कई राज्यों में रॉक आर्ट को लेकर शोध चल रहा है, लेकिन उत्तर प्रदेश में अभी इस ओर कभी कोई शोध स्तर पर नहीं हुआ है। [illegible] के रॉक आर्ट को लिया गया है। जिससे इसका फायदा देश-विदेश में नहीं हो पाया है। यूपी में रॉक आर्ट के लिए भी कोई डेटाबेस नहीं है। सर्वे में यूपी में पहली बार उसके हेरिटेज को सामने लाने के लिए [illegible] पर आयोजित संगोष्ठी में बोलते हुए रॉक आर्ट यूनिट के निदेशक डॉ.बीएल मल्ला ने कही।

डॉ.बीएल मल्ला ने कहा कि यूपी में पहली बार रॉक आर्ट का वैज्ञानिक सर्वेक्षण किया जा रहा है। जिसका लोकल डाटा, [illegible] को बताया गया है। देश के 12 प्रदेशों में पिछले [illegible] वर्षों में रॉक आर्ट के सांस्कृतिक डाटा को संरक्षित किया है। यहां [illegible] में रॉक आर्ट की समय की जरूरत हो पड़ती। यहीं संस्थान के वैज्ञानिक [illegible] को प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर नियुक्त किया गया है। इस मौके पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के प्रमुख सचिव हरशरण दास, [illegible] के निदेशक [illegible], रॉक आर्ट के विशेषज्ञ [illegible] मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री को कराना होगा प्रदेश की धरोहर से रूबरू

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के प्रमुख सचिव डॉ.हरशरण दास ने कहा कि सरकार रॉक आर्ट के विषय में अनभिज्ञ है। हमें मुख्यमंत्री को यूपी के हेरिटेज से रूबरू कराना होगा। मिर्जापुर और सोनभद्र में रॉक आर्ट का खजाना है। जिसे संरक्षित करना होगा। साथ ही इसके लिए अलग विभाग बनाकर उसकी मॉनीटरिंग करनी होगी।

फरवरी से शुरू होगा कार्यक्रम का पहला चरण

फरवरी 2015 से यूपी में रॉक आर्ट सर्वेक्षण का पहला चरण शुरू होगा। इसके लिए विश्वविद्यालय और वैज्ञानिक संस्थानों के शोध छात्रों को खास ट्रेनिंग दी जाएगी। जो रॉक आर्ट सर्वेक्षण के कार्य में योगदान [illegible] जा रहा है कि इसमें करीब 15 हजार साल पहले के रॉक आर्ट की [illegible] सभ्यता का इतिहास के कई पहलुओं को सामने लाया जा सकता है।

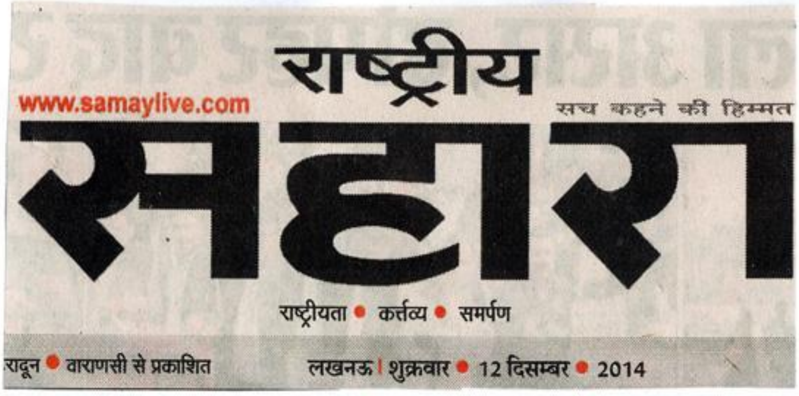

राष्ट्रीय
www.samaylive.com
सच कहने की हिम्मत
सहारा
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
रादून • वाराणसी से प्रकाशित
लखनऊ | शुक्रवार • 12 दिसम्बर • 2014

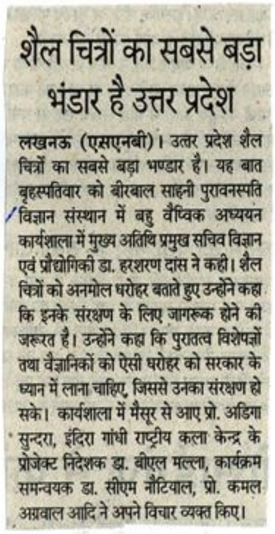

शैल चित्रों का सबसे बड़ा भंडार है उत्तर प्रदेश

लखनऊ (एसएनबी)। उत्तर प्रदेश शैल चित्रों का सबसे बड़ा भण्डार है। यह बात बृहस्पतिवार को बीरबाल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान में बहु वैष्विक अध्ययन कार्यशाला में मुख्य अतिथि प्रमुख सचिव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी डा. हरशरण दास ने कही। शैल चित्रों को अनमोल धरोहर बताते हुए उन्होंने कहा कि इनके संरक्षण के लिए जागरूक होने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि पुरातत्व विशेषज्ञों तथा वैज्ञानिकों को ऐसी धरोहर को सरकार के ध्यान में लाना चाहिए, जिससे उनका संरक्षण हो सके। कार्यशाला में मैसूर से आए प्रो. अडिगा सुन्दरा, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रोजेक्ट निदेशक डा. बीएल मल्ला, कार्यक्रम समन्वयक डा. सीएम नौटियाल, प्रो. कमल अग्रवाल आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

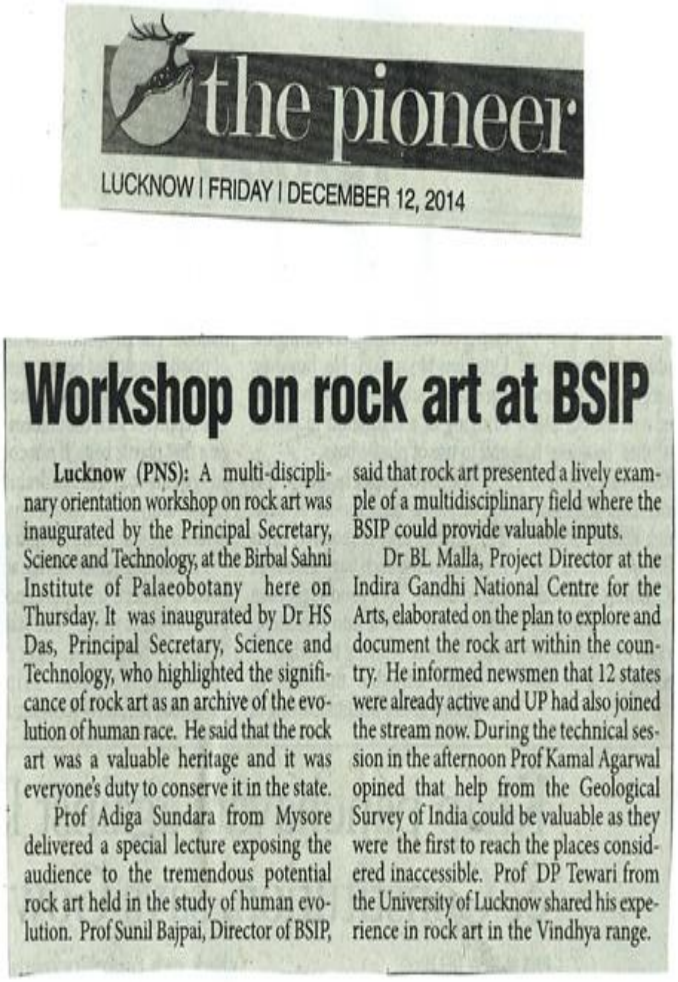

the pioneer

LUCKNOW | FRIDAY | DECEMBER 12, 2014

Workshop on rock art at BSIP

Lucknow (PNS): A multi-disciplinary orientation workshop on rock art was inaugurated by the Principal Secretary, Science and Technology, at the Birbal Sahni Institute of Palaeobotany here on Thursday. It was inaugurated by Dr HS Das, Principal Secretary, Science and Technology, who highlighted the significance of rock art as an archive of the evolution of human race. He said that the rock art was a valuable heritage and it was everyone's duty to conserve it in the state.

Prof Adiga Sundara from Mysore delivered a special lecture exposing the audience to the tremendous potential rock art held in the study of human evolution. Prof Sunil Bajpai, Director of BSIP, said that rock art presented a lively example of a multidisciplinary field where the BSIP could provide valuable inputs.

Dr BL Malla, Project Director at the Indira Gandhi National Centre for the Arts, elaborated on the plan to explore and document the rock art within the country. He informed newsmen that 12 states were already active and UP had also joined the stream now. During the technical session in the afternoon Prof Kamal Agarwal opined that help from the Geological Survey of India could be valuable as they were the first to reach the places considered inaccessible. Prof DP Tewari from the University of Lucknow shared his experience in rock art in the Vindhya range.

अमर उजाला

हरियाणा । दिल्ली । चंडीगढ़ । पंजाब । उत्तर प्रदेश । उत्तराखंड । हिमाचल । जम्मू-कश्मीर

राजधानी वर्ष 7 अंक 164 पृष्ठ : 20+8+16=44 मूल्य : ₹ 4.00

पहल शैल कला का होगा वैज्ञानिक अध्ययन, बीएसआईपी व इंदिरागांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की पहल

'अजंता-एलोरा से ज्यादा खूबसूरत यूपी के शैल चित्र'

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। शैल कला में केवल देश की अजंता और एलोरा में ही खूबसूरती नहीं बसती। इससे कहीं अधिक खूबसूरती और इतिहास की जानकारी देने वाली शैल चित्रों की अनमोल धरोहर यूपी में मौजूद करीब 500 गुफाओं में छिपी है। अब तक अनछुई इस विरासत को सामने लाने की कवायद इंदिरागांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) और बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पालियोबॉटनी (बीएसआईपी) ने की है। दोनों संस्थान की ओर से संयुक्त रूप से पहली बार यूपी के शैल चित्रों की विरासत की वैज्ञानिक स्टडी की जाएगी। बीएसआईपी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सीएम नौटियाल को इसकी जिम्मेदारी दी गई है।

आईजीएनसीए के नेशनल प्रोग्राम ऑन डॉक्यूमेंटेशन, रिसर्च एंड डिसेमिनेशन ऑफ रॉक आर्ट में इसके लिए यूपी को शामिल किया गया है। कार्यक्रम निदेशक डॉ. बीएल मल्ला ने बताया कि अभी तक देश के 12 राज्यों में वे काम कर चुके हैं। यूपी में इस तरह का कोई काम अब तक नहीं हुआ है। उन्होंने बताया कि बीएसआईपी की रेडियोकार्बन लैब के वैज्ञानिक प्रभारी और यूपी पाषाण कला प्रलेखन समिति के समन्वयक डॉ. सीएम नौटियाल इस प्रोजेक्ट के को-ऑर्डिनेटर होंगे।

गुरुवार को शुरू हुई कार्यशाला से इसकी शुरूआत कर दी गई है। कार्यशाला का उद्देश्य वैज्ञानिक रूप से स्टडी किए जाने के लिए वैज्ञानिकों और सहयोगी स्टाफ को प्रशिक्षित करना है। फरवरी 2015 में यह स्टडी शुरू की जाएगी।

जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के वैज्ञानिक डॉ. कमल अग्रवाल ने भी जानकारी दी। डॉ. मल्ला ने कहा कि यूपी में अजंता-एलोरा से खूबसूरत शैल कला वे पाते है। अजंता-एलोरा में राजशाही झलकती है। वहीं, यूपी में मिले शैल चित्रों में उस समय की जीवनशैली और उनकी समझ पता चलती है।

ts in Uttar Pradesh
Pradesh
w Delhi
radesh

प्रमुख सचिव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी डॉ. हरशरण दास को मुमेंटो भेंट करते बीएसआईपी के निदेशक डॉ. सुनील बाजपेयी।

यह होगा फायदा

शैल चित्रों की जगह की सैटेलाइट मैपिंग, रेडियोकार्बन डेटिंग से उनकी उम्र का पता, हजारों साल पुराना इतिहास, समय के साथ आए बदलाव का आंकलन कर भविष्य की जानकारी

मिले प्रशिक्षण

मुख्य अतिथि प्रमुख सचिव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी डॉ. हरशरण दास ने कहा कि ऐसी महत्वपूर्ण साइटों के बारे में प्रशासनिक अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

इन जगहों पर रहेगी स्टडी

मिर्जापुर, सोनभद्र, इलाहाबाद, चित्रकूट, बांदा, चंदौली, शंकरगढ़

शैल चित्रों में नंबर वन संरक्षण में पिछड़े

मैसूर से आए देश के टॉप इतिहासकार व शैल चित्रों के जानकार प्रो. अडिगा सुंदरा ने बताया कि पूरी दुनिया में शैल चित्रों में भारत की रेटिंग पहली है। दूसरे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया आता है। शैल चित्र संरक्षित करने में हम विफल रहे हैं। इनकी वैज्ञानिक आधार पर स्टडी और संरक्षण का काम होना चाहिए। स्थानीय लोगों से भी जानकारी ले।

99% रॉक साइट संरक्षित नहीं

आर्कियोलॉजिस्ट डॉ. डीपी तिवारी ने बताया कि सोन, बेलन, नदवा नदी के किनारे मौजूद साइटों में मौजूद जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है। असल में कैमूर की पहाड़ियों और दूसरी जगहों पर मौजूद शैल चित्रों में 99 प्रतिशत तक पर कोई काम नहीं हुआ। इनका संरक्षण जरूरी है।

शुक्रवार , 12 दिसंबर 2014

हिन्दुस्तान

मुख्यमंत्री को बताना होगा कि यूपी में क्या है

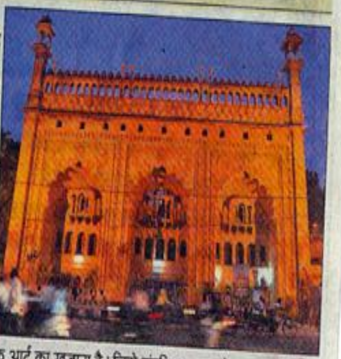

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के प्रमुख सचिव डॉ.हरशरण दास ने कहा कि सरकार में रॉक आर्ट के विषय में कोई नही जानता। हमे मुख्यमंत्री को यूपी के हैरिटेज से रुबरु कराना होगा। मिर्जापुर और सोनभद्र में रॉक आर्ट का खजाना है। जिसे संरक्षित करना होगा। साथ ही इसके लिए अलग विभाग बनाकर उसकी मॉनीटरिंग करनी होगी।

यूपी में पहली बार होगा रॉक आर्ट का वैज्ञानिक सर्वेक्षण

वहीं कार्यक्रम में बोलते हुए रॉक आर्ट यूनिट के निदेशक डॉ.बीएल मल्ला ने कहा कि हिन्दुस्तान रॉक आर्ट के मामले में दुनिया का नंबर एक देश है। लेकिन अभी भी यहां इसके संरक्षण के व्यापक इंतजाम नहीं हैं। यूपी में आज तक रॉक आर्ट पर कोई वैज्ञानिक रिसर्च हुई ही नही है। सिर्फ रिसर्च के लिए पीएचडी धारकों ने अपना मत रखा है। ऐसे में यूपी में पहली बार उसके हैरिटेज को सामने लाने के लिए बीएसआईपी और इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट मिलकर काम करेंगे। उन्होंने कहा कि देश के 12 प्रदेशों में हमने रॉक आर्ट के साइंटिफिक डाटा को संरक्षित किया है। यूपी में पहली बार रॉक आर्ट का साइंटिफिक सर्वेक्षण किया जा रहा है। जिसका नोडल सेंटर बीएसआईपी को बनाया गया है। जहां यूरेनियम थोरियम डेटिंग विधि से रॉक आर्ट की समय की गणना हो पाएगी। वहीं संस्थान के वैज्ञानिक डॉ.सीएस नौटियाल को पूरे प्रोग्राम का कॉर्डिनेटर नियुक्त किया गया है। यहां विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के प्रमुख सचिव हरशरण दास, बीएसआईपी के निदेशक डॉ.सुनील बाजपेई,रॉक आर्ट के विशेषज्ञ ए सुन्दरा मौजूद रहे।

फरवरी से शुरू होगा सर्वेक्षण कार्य

फरवरी 2015 से यूपी में रॉक आर्ट संरक्षण का काम शुरु होगा। इसके लिए विवि और वैज्ञानिक संस्थानों के शोध छात्रों को खास ट्रेनिंग दी जाएगी। जो रॉक आर्ट संरक्षण के कार्य में योगदान करेंगे। उम्मीद की जा रही है कि इससे करीब 15 हजार साल पहले के रॉक आर्ट का साइंटिफिक संरक्षण कर इतिहास के कई खजानों को सामने लाया जा सकता है।

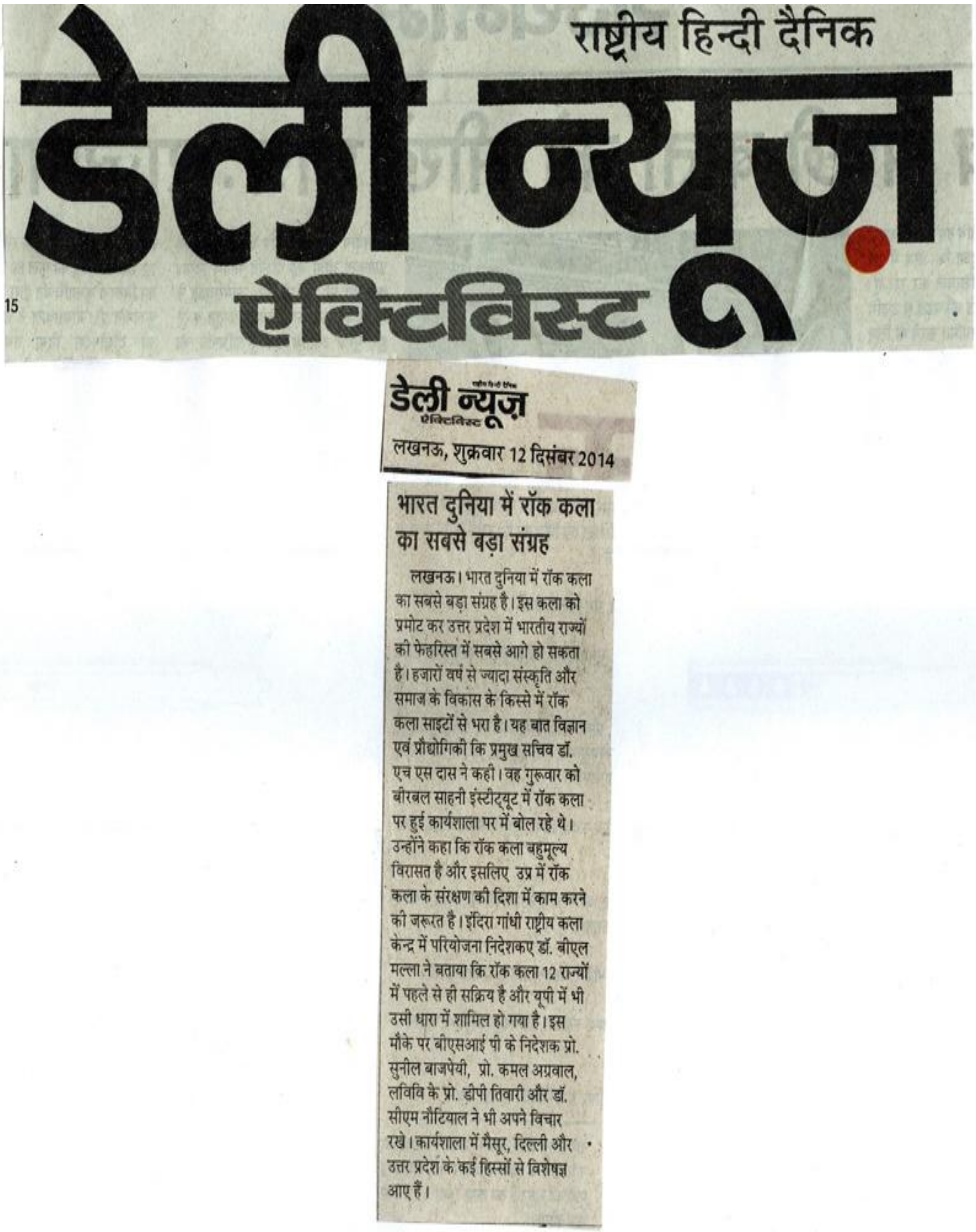

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
डेली न्यूज़
ऐक्टिविस्ट
15

डेली न्यूज़
ऐक्टिविस्ट
लखनऊ, शुक्रवार 12 दिसंबर 2014

भारत दुनिया में रॉक कला का सबसे बड़ा संग्रह

लखनऊ। भारत दुनिया में रॉक कला का सबसे बड़ा संग्रह है। इस कला को प्रमोट कर उत्तर प्रदेश में भारतीय राज्यों की फेहरिस्त में सबसे आगे हो सकता है। हजारों वर्ष से ज्यादा संस्कृति और समाज के विकास के किस्से में रॉक कला साइटों से भरा है। यह बात विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कि प्रमुख सचिव डॉ. एच एस दास ने कही। वह गुरूवार को बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट में रॉक कला पर हुई कार्यशाला पर में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि रॉक कला बहुमूल्य विरासत है और इसलिए उप्र में रॉक कला के संरक्षण की दिशा में काम करने की जरूरत है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में परियोजना निदेशकए डॉ. बीएल मल्ला ने बताया कि रॉक कला 12 राज्यों में पहले से ही सक्रिय है और यूपी में भी उसी धारा में शामिल हो गया है। इस मौके पर बीएसआई पी के निदेशक प्रो. सुनील बाजपेयी, प्रो. कमल अग्रवाल, लविवि के प्रो. डीपी तिवारी और डॉ. सीएम नौटियाल ने भी अपने विचार रखे। कार्यशाला में मैसूर, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के कई हिस्सों से विशेषज्ञ आए हैं।